

## बौद्ध धर्म की वैश्विक वरिासत

### प्रलमिस के लयि:

भारतीय पुराततव सरवेकषण, बौद्ध धरु, कलगि पर आकरुण, महायान, वजरयान, बालीयातरा महोतसव, नालंदा वशिववदियालय, समराट कुुमारगुपत परथु, गुपुत सामराजु, आरुयभट्ट, पांडुलपियीं, अंकोर वाट, थेरवाद, युनेसको वशिव धरोहर स्थल, एलोरा गुफाएँ, अजंता गुफाएँ, साँची स्तूप ।

### मेनुस के लयि:

बौद्ध धरु का वैश्विक प्रसार, भारत में प्रमुख बौद्ध स्थल, नालंदा वशिववदियालय ।

[सुरोत: इंडयिन एक्सप्रेस](#)

## चरुा में करुीं?

भारतीय पुराततव सरवेकषण ने ओडशिया के रतुनागरि में एक बड़ा बुद्ध सरि, एक वशाल ताड का वृकुष, एक प्राचीन दीवार और उत्कीरुण बौद्ध अवशेष खोजे हैं, जनुके बारे में माना जाता है कयिे सभी 8वीं और 9वीं शताब्दी ई. के हैं ।

- इसने ओडशिया के माध्यु से दकुषणि-पूर्व एशिया में बौद्ध धरु के प्रचार-प्रसार पर भी प्रकाश डाला गया ।

## ओडशिया ने बौद्ध धरु प्रचार में कैसे मदद की?

- बुद्ध की भूुकिका:** यदुपर्ा बुद्ध के ओडशिया आने का कोई प्रमाण नहीं है, फरि भी वशिषजु बुद्ध के शषियों तपससु और भल्लुका (उत्कल के वुयापारी भाई) को **बौद्ध धरु को लुकप्रयि बनाने में महतुवपूर्ण वुयकुती भानते हैं ।**
- मौरुय प्रभाव:** समराट अशोक के 261 ईसा पूर्व में **कलगि (प्राचीन ओडशिया) पर आकरुण** के कारण उनुहें बौद्ध धरु अपनाना पडा, जसिे उनुहोंने दकुषणि और दकुषणि-पूर्व एशिया में फैलाया ।
- हवेन तुसांग की यातरा:** अधुयनुों से पता चलता है कचिनी बौद्ध भकुषु और यातरी हवेन तुसांग, जनुहोंने 638-639 ई. में ओडशिया का दौरा कयिा था, उनुहोंने रतुनागरि का भी दौरा कयिा हुगा, जसिसे उनुहें इस कुषेतर की **जीवनशैली, संसुकृती, धरु, कला और वासुकला** के बारे में जानकारी मली हुगी ।
- ऐतहिसकु स्थल:**ओडशिया में 100 से अधकु प्राचीन बौद्ध स्थल हैं, जनुमें रतुनागरि, उदुयगरि और ललतुगारि के साथ हीरक तरुभुज का हसिा भी शामिल है ।
  - रतुनागरि, जो 7वीं-10वीं शताब्दी का नालंदा से प्रतसुपरुद्धा करने वाला एक प्रमुख बौद्ध शकुषण केंद्र था, में ईटों से बने स्तूप, मठ प्रसुर और मनुनत स्तूप जैसे अवशेष मलिे हैं ।
  - ऐसा माना जाता है कररतुनागरि **महायान और वजरयान संप्रदाय** का केंद्र था, और इस स्थल पर **तबुबती ग्रंथ** भी पाए गए थे ।
  - रतुनागरि की बुद्ध मूरतयिीं अपनी **जटलि, वशिषुट केशवनियास के लयिे अदुवतीय** हैं जनुहें भारत में अनुुतर नहीं देखा जा सकता है ।
- सुदुदरी और वुयावसायकु संबंध:** बाली, जावा, सुमातरा और शरीलंका जैसे कुषेतरों के साथ ओडशिया के वुयापार ने वशिष रूु से **दकुषणि पूर्व एशिया** में बौद्ध धरु के प्रसार में मदद की ।
  - बालीयातरा महोतसव** दकुषणि पूर्व एशिया के साथ **ओडशिया के 2,000 वरु पुराने सुदुदरी संबंधों** और बौद्ध धरु के प्रसार में इसकी भूुकिका का सुमान करता है ।
- भौुकारा राजवंश:** ओडशिया में **भौुकारा राजवंश** (8वीं-10वीं शताब्दी) के शासन में बौद्ध धरु का वकिस हुआ, जसिने इस कुषेतर की **सुदुदुध बौद्ध वरिासत** में युगदान दयिा ।

### नुत:

- महायान:** महायान, जसिका संसुकृत में अरुथ "ग्रुेट वहीकल" है, बौद्ध धरु के संप्रदायों में से एक है ।
  - इसमें **बुद्ध की दवुयता** तथा बुद्ध के मूरुतरूु एवं **बोधसुतुव की मूरुतपूजा** में वशिवास कयिा गया है ।

- इसकी उत्पत्ति 72 ई. में कनषिक के शासनकाल के दौरान कश्मीर में चतुर्थ बौद्ध संगीत में हुई और फरि इसका पूर्व में मध्य एशिया, पूर्वी एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के कुछ कषेत्रों में वसितार हुआ।
- चीन, कोरिया, तबिबत और जापान में स्थिति बौद्ध संप्रदाय महायान परंपरा से संबंधित है।
- **वज्रयान:** वज्रयान का अर्थ "वज्र का वाहन" है जिससे तांत्रिक बौद्ध धर्म के रूप में भी जाना जाता है।
  - इसमें तांत्रिक प्रथाओं को शामिल किया गया है, जिसमें आध्यात्मिक बोध प्राप्त करने के लिये जटिल अनुष्ठान, कल्पना, मंत्र और ध्यान तकनीक शामिल हैं।
  - वज्रयान का संबंध मुख्यतः हिमालयी कषेत्रों से है जिनमें तबिबत, नेपाल, भूटान और मंगोलिया के कुछ हिस्से शामिल हैं।
- **हीनयान:** इसे अक्सर "लेसर वहीकल" के रूप में संदर्भित किया जाता है जिसके तहत मुख्य रूप से आत्म-अनुशासन तथा ध्यान के माध्यम से नरिवाण पर बल दिया जाता है।
  - यह मठवासी नियमों, ध्यान प्रथाओं और नैतिक आचरण के सख्त पालन पर केंद्रित है।
  - हीनयान बौद्ध धर्म में अरहत एक आदर्श स्थिति है जिसके तहत ज्ञान प्राप्त करना शामिल है, जबकि महायान में बोधसित्व द्वारा दूसरों के ज्ञान मार्ग में सहायता के लिये नरिवाण को वलिंबित किया जाता है।

## नालंदा विश्वविद्यालय

- **स्थापना:** नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना गुप्त साम्राज्य के सम्राट कुमारगुप्त प्रथम ने 5वीं शताब्दी ई. में, लगभग 450 ई. में की थी।
  - यह विश्वविद्यालय 8वीं और 9वीं शताब्दी के दौरान पाल वंश के संरक्षण में विकसित हुआ।
  - यह प्राचीन मगध राज्य (आधुनिक बिहार) में स्थित था।
- **अंतर्राष्ट्रीय ख्याति:** विश्व के पहले आवासीय विश्वविद्यालय के रूप में नालंदा ने कोरिया, जापान, चीन, मंगोलिया, श्रीलंका, तबिबत और दक्षिण पूर्व एशिया के विद्वानों को आकर्षित किया।
- **प्रवेश प्रक्रिया:** नालंदा में प्रवेश प्रतिसिपर्द्धी प्रणाली पर आधारित था, जिसमें कठोर साक्षात्कार होते थे और छात्रों को धर्मपाल और शीलभद्र जैसे विद्वानों एवं बौद्ध आचार्यों द्वारा मार्गदर्शन दिया जाता था।
- **पाठ्यक्रम और विषय:** इस विश्वविद्यालय में चिकित्सा, आयुर्वेद, बौद्ध धर्म, गणित, व्याकरण, खगोल विज्ञान तथा भारतीय दर्शन सहित कई विषयों की पढ़ाई होती थी।
  - भारतीय गणितज्ञ और शून्य के आविष्कारक आर्यभट्ट 5वीं शताब्दी ई. में नालंदा विश्वविद्यालय के एक प्रमुख शिष्य थे।
- **पुस्तकालय और पांडुलिपियाँ:** इस पुस्तकालय में नौ मिलियन से अधिक हस्तलिखित ताड-पत्ता पांडुलिपियाँ रखी गई थीं, जो इसे बौद्ध ज्ञान का सबसे समृद्ध भंडार बनाती हैं।
- **वनाश:** वर्ष 1193 में इस्लामी आक्रमणकारी बख्तियार खलिजी ने विश्वविद्यालय को ध्वस्त कर दिया, भिक्षुओं को मार डाला और मूल्यवान पुस्तकालय को जला दिया।

## बौद्ध धर्म दक्षिण पूर्व एशिया में किस प्रकार वसितारित हुआ?

- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान:** भारतीय व्यापारियों, नाविकों और भिक्षुओं ने दक्षिण-पूर्व एशिया में बौद्ध धर्म के प्रसार में मदद की, जहाँ श्रीवजिय (सुमात्रा, इंडोनेशिया) और चंपा (वियतनाम) जैसे बंदरगाह 7वीं से 13वीं शताब्दी तक शिक्षा एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान के प्रमुख केंद्र के रूप में कार्य करते रहे।
- **शासकों की वैधता:** दक्षिण-पूर्व एशियाई शासकों ने अपनी सत्ता को मजबूत करने के लिये बौद्ध धर्म को अपनाया तथा अपने शासन को वैध बनाने के लिये बुद्ध या हद्दि देवी-देवताओं की पूजा की।
  - सुमात्रा में केंद्रित श्रीवजिय साम्राज्य ने बौद्ध धर्म के प्रसार में प्रमुख भूमिका निभाई।
- **हद्दि धर्म और बौद्ध धर्म का सम्मिश्रण:** दक्षिण पूर्व एशिया में बौद्ध धर्म अक्सर स्थानीय मान्यताओं और हद्दि धर्म के साथ मश्रित हो गया।
  - दक्षिण-पूर्व एशिया के बौद्ध और हद्दि मंदिर, जैसे अंकोरवाट (कंबोडिया) और बोरोबुदुर (इंडोनेशिया), इस सम्मिश्रण को प्रदर्शित करते हैं।
- **सांस्कृतिक प्रसार:** बौद्ध धर्म ने बाली और जावा जैसे स्थानों की स्थानीय संस्कृतियों को प्रभावित किया, जिनसे उनके नृत्य, अनुष्ठानों और मंदिर वास्तुकला में देखा जा सकता है।

# बौद्ध धर्म



Drishti IAS



## उत्पत्ति

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व, गौतम बुद्ध की शिक्षाओं पर आधारित

## मुख्य विशेषताएँ

- सार - आत्मज्ञान की प्राप्ति (निर्वाण)
- सर्वोच्च देवता - कोई नहीं

## सिद्धांत

- अति से बचें; **मध्यम मार्ग** (मध्य मार्ग) का पालन करें
- व्यक्तिवादी घटक (हर कोई अपनी खुशी के लिये स्वयं जिम्मेदार है)
- चार महान सत्य:
  - ◆ दुख (दुःख) - संसार दुखों से भरा हुआ है
  - ◆ समुदय - प्रत्येक दुख का एक कारण है
  - ◆ निरोध - दुखों का निवारण किया जा सकता है
  - ◆ यह अथांग मग्गा (आष्टांगिक मार्ग) का पालन करके प्राप्त किया जा सकता है।
- आष्टांगिक मार्ग:
  - ◆ सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक, सम्यक कर्मात्, सम्यक आजीव, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति, सम्यक समाधि

## बौद्ध धर्म अस्वीकार करता है

- वेदों की प्रामाणिकता
- आत्मा की अवधारणा (जैन धर्म के विपरीत)

## प्रमुख बौद्ध ग्रंथ

- सुत्त पिटक (बुद्ध की प्रमुख शिक्षाएँ - धम्म)
- विनयपिटक (भिक्षुओं/ननियों के लिये आचरण के नियम)
- अभिधम्म पिटक (दार्शनिक विश्लेषण)
- अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ- दिव्यवदान, दीपवंश, महावंश, मिलिंद पन्हो

पहली बौद्ध संगीति में बुद्ध की शिक्षाओं को 3 पिटकों में विभाजित किया गया था

इन शिक्षाओं को 25वीं शताब्दी ई.पू में पाली भाषा में लिखा गया था।

## बौद्ध परिषद

बौद्ध परिषद	संरक्षक	स्थान	अध्यक्ष	वर्ष
पहली	अजातशत्रु	राजगृह	महाकस्यप	483 ई.पू.
दूसरी	कालाशोक	वैशाली	सुबुकामि	383 ई.पू.
तीसरी	अशोक	पाटलिपुत्र	मोगालिपुत्र	250 ई.पू.
चौथी	कनिष्क	कुण्डलवन (कश्मीर)	वसुमित्र	72 ई.

## बौद्ध धर्म विश्व स्तर पर कैसे फैला?

- **दक्षिण-पूर्व एशिया:** 5वीं शताब्दी ई. तक बौद्ध धर्म **म्यांमार और थाईलैंड** तक फैल गया और 13वीं शताब्दी तक **थेरवाद संप्रदाय** (जसिका अर्थ है "बुजुर्गों का मार्ग") दक्षिण और **दक्षिण-पूर्व एशिया** में बौद्ध धर्म का प्रमुख रूप बन गया।
- **चीन:** 7वीं शताब्दी ई. तक, बौद्ध धर्म ने **कन्फ्यूशियस और ताओवादी परंपराओं** के साथ अंतर्क्रिया करते हुए **चीनी संस्कृति** को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया था।
- **कोरिया और जापान:** 7वीं शताब्दी ई. तक बौद्ध धर्म का कोरिया में वसितार हो गया।
  - छठी शताब्दी ई. में बौद्ध धर्म जापान में आया, जहाँ यह **शटो और अन्य स्वदेशी** परंपराओं के साथ मशरूति हो गया।
- **तिब्बत:** 8वीं शताब्दी ई. में, पूर्वोत्तर भारत की **तांत्रिक परंपराओं से प्रभावित बौद्ध धर्म** का तिब्बत में वसितार हुआ।
  - वहाँ, यह स्वदेशी **बॉन धर्म** के साथ विलीन हो गया तथा **वज्रयान ("Diamond Vehicle")** के रूप में **वकिसति** हुआ, जो महायान बौद्ध

## भारत में प्रमुख बौद्ध स्थल कौन से हैं?

- **बिहार:** बोधगया वह स्थान है जहाँ **सिद्धार्थ गौतम** को **बोधवृक्ष** के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।
  - **महाबोधिमंदिर**, जिसे वर्ष 2002 में **यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल** के रूप में **शामल किया गया**, यह वह स्थान है जहाँ बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था।
  - **वैशाली (बिहार)** में बुद्ध ने अपने **आसन परनिर्वाण** की घोषणा की तथा अपना अंतिम उपदेश दिया।
  - **नालंदा विश्वविद्यालय** एक प्रसिद्ध **प्राचीन शिक्षा केंद्र** था, जहाँ विश्व से बौद्ध विद्वान एकत्रित होते थे।
- **उत्तर प्रदेश:** **सारनाथ** में बुद्ध ने अपने शिष्यों को अपना **पहला उपदेश** दिया था, जिसमें उन्होंने **चार आर्य सत्य** और **अष्टांगिक मार्ग** की रूपरेखा बताई।
  - **सारनाथ में धमेक स्तूप** बुद्ध के प्रथम उपदेश का स्थल है।
  - **कुशीनगर** वह स्थान है जहाँ **बुद्ध की मृत्यु हुई** तथा उन्हें **परनिर्वाण (अंतिम निर्वाण)** प्राप्त हुआ।
    - ऐसा माना जाता है कि कुशीनगर स्थिति **रामाभार स्तूप** वह स्थान है जहाँ **बुद्ध का अंतिम संस्कार** किया गया था।
- **हिमाचल प्रदेश:** धर्मशाला, खासतौर पर **मैकलॉडगंज, तबिबती निर्वासित सरकार** और **दलाई लामा** का घर है। यह तबिबती बौद्धों का केंद्र है।
- **महाराष्ट्र:** **एलोरा की गुफाएँ** यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल हैं, जिनमें बौद्ध, हिंदू और जैन परंपराओं के चट्टान काटकर बनाए गए मंदिर और मूर्तियाँ शामिल हैं।
  - **अजंता की गुफाएँ** प्राचीन बौद्ध मठों और बुद्ध के जीवन को दर्शाने वाले सुंदर भित्तिचित्रों के लिये प्रसिद्ध हैं।
- **मध्य प्रदेश:** **साँची स्तूप** एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है, जो अपने **बौद्ध स्तूपों**, मठों और स्तंभों के लिये जाना जाता है।

## नषिकर्ष:

ओडिशा की समृद्ध बौद्ध वरिष्ठ, **रत्नागिरी जैसे प्रमुख स्थलों** द्वारा उजागर, और एशिया भर में बौद्ध धर्म के प्रसार में भारत की भूमिका इसके वैश्विक प्रभाव को दर्शाती है। **नालंदा जैसे प्राचीन विश्वविद्यालयों और विविध बौद्ध परंपराओं** के साथ, वैश्विक संस्कृति और धर्म में भारत का योगदान गहरा और स्थायी है।

**दृष्ट मुख्य परीक्षा प्रश्न:**

**प्रश्न:** एशिया में बौद्ध धर्म के प्रसार में भारतीय समुद्री व्यापार की भूमिका का आकलन कीजिये।

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

**प्रश्न.** भारत के धार्मिक इतिहास के संदर्भ में नमिनलखिति कथनों पर वचिार कीजिये: (2020)

1. स्थवरिवादी महायान बौद्ध धर्म से संबद्ध हैं।
2. लोकोत्तरवादी संप्रदाय बौद्ध धर्म के महासंघिक संप्रदाय की एक शाखा थी।
3. महासंघिकों द्वारा बुद्ध के देवत्वरोपण ने महायान बौद्ध धर्म को प्रोत्साहति किये।

**उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?**

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 3
- (d) 1, 2 और 3

**उत्तर: (b)**

**प्रश्न.** भारत के धार्मिक इतिहास के संदर्भ में नमिनलखिति कथनों पर वचिार कीजिये: (2016)

1. बोधसित्व, बौद्धमत के हीनयान संप्रदाय की केंद्रीय संकल्पना है।
2. बोधसित्व अपने प्रबोध के मार्ग पर बढ़ता हुआ करूणामय है।
3. बोधसित्व समस्त सचेतन प्राणियों को उनके प्रबोध के मार्ग पर चलने में सहायता करने के लिये स्वयं की निर्वाण प्राप्ति विलिंबति करता है।

**उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं:**

- (a) केवल 1

- (b) केवल 2 और 3  
(c) केवल 2  
(d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

**??????**

Q. पाल काल भारत में बौद्ध धर्म के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण चरण है। सूचीबद्ध कीजिये। (2020)

Q. प्रारंभिक बौद्ध स्तूप-कला, लोक वर्ण्य वषियों और कथानकों को चित्रित करते हुए बौद्ध आदर्शों की सफलतापूर्वक व्याख्या करती है। वशिदीकरण कीजिये। (2016)

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/buddhism-s-global-legacy>

